मौत भी सिखाती है

लेखिका - श्रीमती शिल्पी कुमारी (श्री विवेकानन्द भारती, वैज्ञानिक की पत्नी)

आज सहसा मौत से इजहार-ए-मोहब्बत की मैंने,
उससें खुदको आग़ोश में भरने की गुजारिश की मैंने,
बड़ी सिद्धत से उसे पाने की चाहत की मैंने,
ज़िन्दगी की बेरुखी की शिकायत की मैंने,
अपने दर्द-ए-दिल के उपचार की फ़रियाद की मैंने |

ज़िन्दगी के हर एक खेल से परेशान थी मैं,
क्षण भर की ख़ुशी और पहाड़ो सी दुःख से आहत थी मैं,
ज़िन्दगी के हाथों की कठपुतली बन गई थी मैं,
साहसी जन्मी और बुजदिल बन गई थी मैं |

कभी कोई शिकायत न की इस ज़िन्दगी से ,
इसके हर एक सित्तम सह ली ख़ुशी से ,
ना पहले कभी टूटी थी, ना आज टूटी हूँ मैं ,
पर आज मुझे तेरी ज़रुरत हैं |

अत्याचारी ज़िन्दगी से हार गई सहनशक्ति मेरी ,
तन्हा, अकेली, बिखड़ी हूँ मैं ,
बस अब और नहीं सह सकती,
समेट लो मझे अपनी बाँहों में ,
बस अब एक तेरा ही सहारा है मुझे ,
मोहब्बत तुझसे हुई है, एक पल भी ज़िन्दगी का साथ ना गवांरा है मुझे |

चुपके से ले चल मुझे, आहट ना हो पाए ज़िन्दगी को इसकी ,
वो फिर आ जाएगी वरना, जाएगी तुझसे छीन ,
तेरे साथ की चाहत जो थी अब, एक नहीं सुननी उसकी ,
आज़ाद कर उसके हर एक यातना से ,
आज तेरी प्रियषी की आग्रह हैं तुझसे |
पास आ बैठी मौत मेरी ,
मुस्कुराकर एक टक घुरती रही मुझे ,
असमंजस में पड़ी मैं बोली उससे ,
मूक - बधिर बन क्यू बैठी हो ,
शब्दों की माला बना जवाब दो मुझे |

उसने कहा क़ुबूल है तेरी मोहब्बत मुझे ,
भर लुंगी अपने आग़ोश में तुझे ,
तेरी चाहत को एक नाम दूंगी ,
पर कशमकश में क्यूँ लग रही है तू मुझे ,
क्या अपने फैसले पे सच में हैं ऐतबार तुझे |

एक सुझाव तुझे देने की गुश्ताखी करनी है मुझे ,
माना ज़िन्दगी की बेरुखी से आहत हैं तू ,
अपने घायल दिल से चोटिल है तू ,
धुप – छाँव से भरी ज़िन्दगी है तेरी ,
पर क्या सच में ज़िन्दगी से हारी एक लाचार बेचारी है तू |

निष्पाप, निष्कलंक, निष्छल जन्मी थी तू ,
ईश्वर की अनमोल रचना थी तू ,
खुशहाल, आनंदित ज़िन्दगी थी तेरी ,
ज़िन्दगी की एक मात्र प्रियषी थी तू ,
फिर तू आज क्यूं क़ोस रही है ज़िन्दगी को |

वो तो सुख – दुःख के खेल से तुझे सशक्त बना रही थी ,
तुझे विषम परिस्थिति से लड़ना सिखा रही थी ,
अत्याचारी वो नहीं तेरा नजरिया है ,
वो तो तेरी हितैषी है पर तेरे लिए तेरे हर गम की दोषी है |